कधं संजलणाणुभागो अणंतगुणहीणो ? पयडिविसेसादो । तं जहा-अणंताणुबंधिचउक्कं सम्मत-संजमाणं घादयं, संजलणचदुक्कं पुण चारित्तस्सेव विणासयं । तदो अणंताणुबंधिचउक्कसत्तीदो संजलणचउक्कसत्तीए अप्पयरत्तं णव्वदे । तेण अणंताणुबंधिअणुभागादो संजलणाणुभागस्स अणंतगुणहीणत्तं णव्वदे ।

माया विसेसहीणा ॥ ८२ ॥

पयडिविसेसेण ।

कोधो विसेसहीणो ॥ ८३ ॥

पयडिविसेसेण ।

माणो विसेसहीणो ॥ ८४ ॥

पयडिविसेसेण ।

पच्चक्खाणावरणीयलोभो अणंतगुणहीणो ॥ ८५ ॥

कुदो ? पयडिविसेसेण । कधं पयडिविसेसो णव्वदे ? संजलणचउक्कं जहाक्खादसंजमघादयं पच्चक्खाणावरणीयं पुण सरागसंजमघादयं । तेण पच्चक्खाणादो संजलणाणु-

....

होता है तब अनन्तानुबन्धीके अनुभागकी अपेक्षा संज्वलनका अनुभाग अनन्तगुणा हीन कैसे हो सकता है ?

समाधान- प्रकृतिविशेष होनेके कारण वैसा होना सम्भव है । यथा-अनन्तानुबन्धिचतुष्क सम्यक्त्व और संयमका घातक है, परन्तु संज्वलनचतुष्क केवल चरित्रका ही घात करनेवाला है । इसीसे अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी शक्तिकी अपेक्षा संज्वलनचतुष्ककी शक्ति अल्पतर है यह जाना जाता है और इस कारण अनन्तानुबन्धीके अनुभागसे संज्वलनका अनुभाग अनन्तगुणा हीन है, यह जाना जाता है ।

उससे संज्वलन माया विशेषहीन है ॥ ८२ ॥

इसका कारण प्रकृति विशेष है ।

उससे संज्वलन क्रोध विशेषहीन है ॥ ८३ ॥

कारण प्रकृति विशेष है ।

उससे संज्वलन मान विशेषहीन है ॥ ८४ ॥

कारण प्रकृति की विशेषता है ।

उससे प्रत्याख्यानावरण लोभ अनन्तगुणा हीन है ॥ ८५ ॥

इसका कारण प्रकृतिगत विशेषता है ।

शंका- यह प्रकृतिगत विशेषता किस प्रमाणसे जानी जाती है ?

समाधान- संज्वलन चतुष्क यथाख्यात संयमका घातक है, परन्तु प्रत्याख्यानावरणीय सरागसंयमका घातक है। इसीसे प्रत्याख्यानावरणकी अपेक्षा संज्वलनका अनुभाग अतिशय महान है यह जाना जाता है । दूसरे, प्रत्याख्यानावरणका उदय संयतासंयत गुणस्थान तक होता है,

भागमहल्लत्तं णव्वदे । किंच, पच्चक्खाणावरणस्स उदओ संजदासंजदगुणट्ठाणं जाव । संजलणाणं पुण जाव सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदचरिमसमओ त्ति । उवरिमपरिणामेहिं[1] अणंतगुणेहि संजदासंजदपरिणामेहि[2] वि उदयविणासाणुवलंभादो वा णव्वदे जहा संजलणाणुभागादो पच्चक्खाणावरणीयपयडीए अणंतगुणहीणत्तं ।

माया विसेसहीणा ।। ८६ ।।

पयडिविसेसेण । कुदो पयडिविसेसो णव्वदे ? मायाए लोभपुरंगमत्तुवलंभादो ।

कोधो विसेसहीणो ।। ८७ ।।

पयडिविसेसेण । कुदो एसो णव्वदे ? उवसंहरिदकोधमहारिसीणं पि लोभ-माया-णमुदओवलंभादो ।

माणो विसेसहीणो ।। ८८ ।।

कोधपुरंगमत्तदंसणादो ।

अपच्चक्खाणावरणीयलोभो अणंतगुणहीणो ।। ८९ ।।

....

परन्तु संज्वलनोंका उदय सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धि संयतके अन्तिम समय तक रहता है । अथवा अनन्तगुण उपरिम संयतासंयत परिणामोंके भी द्वारा संज्वलनके उदयका विनाश नहीं उपलब्ध होता, इससे भी जाना जाता है कि संज्वलनके अनुभागकी अपेक्षा प्रत्याख्यानावरणीय प्रकृतिका अनुभाग अनन्तगुणाहीन है ।

उससे प्रत्याख्यानावरण माया विशेष हीन है ।। ८६ ।।

इसका कारण प्रकृतिगत विशेषता है ।

शंका-- यह प्रकृतिगत विशेषता किस प्रमाणसे जानी जाती है ?

समाधान-- यतः माया लोभपूर्वक उपलब्ध होती है, अतः उससे प्रकृतिंगत विशेषता जानी जाती है ।

उससे प्रत्याख्यानावरण क्रोध विशेष हीन है ।। ८७ ।।

इसका कारण प्रकृतिविशेष है ।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ।

समाधान-- जिन महर्षियोंने क्रोधका उपसंहार कर लिया है उनके भी लोभ और मायाका उदय उपलब्ध होता है । इससे प्रकृति विशेषका निश्चय होता है ।

उससे प्रत्याख्यानावरण मान विशेष हीन है ।। ८ ।।

कारण कि वह क्रोधपूर्वक देखा जाता है ।

उससे अप्रत्याख्यानावरणीय लोभ अनन्तगुणा हीन है ।। ८९ ।।

....

(१) प्रतिषु-- 'मेहिंतो अणंत' इति पाठः ।

(२) मुद्रितप्रतौ 'संजदासंजद परिणामेहि' इति पाठः नोपलभ्यते ।

कुदो ? पयडिमाहप्पेण । तं कधं णव्वदे ? कज्जथोवबहुत्तदंसणादो । तं जहा- संजमासंजमघादयमपच्चक्खाणावरणीयं पच्चक्खाणावरणीयं पुण संजमघादयं । तेण अपच्चक्खाणावरणादो पच्चक्खाणावरणमहल्लत्तं णव्वदे ।

माया विसेसहीणा ॥ ९० ॥

पयडिविसेसेण ।

कोधो विसेसहीणो ॥ ९१ ॥

पयडिविसेसेण ।

माणो विसेसहीणो ॥ ९२ ॥

पयडिविसेसेण ।

आभिणिबोहियणाणावरणीयं परिभोगंतराइयं च दो वि तुल्लाणि अणंतगुणहीणाणि ॥ ९३ ॥

कुदो ? पयडिविसेसेण । पयडिमाहप्पं कधं णव्वदे ? सव्वघादि-देसघादित्तणेहि । अपच्चक्खाणावरणचदुक्कं सव्वघादि, णिस्सेसदेससंजमघादित्तादो । आभिणिबोहियणाणाव-

....

इसमें प्रकृतिका महत्त्व ही कारण है ।

शंका- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान- उसका परिज्ञान कार्यके अल्पबहुत्वको देखनेसे होता है। यथा-अप्रत्याख्यानावरणीय संयमासंयमका घातक है, परन्तु प्रत्याख्यानावरणीय संयमका विघातक है । इससे अप्रत्याख्यानावरणकी अपेक्षा प्रत्याख्यानावरणकी महत्ता जानी जाती है ।

उससे अप्रत्याख्यानावरण माया विशेष हीन है ॥ ९० ॥

इसका कारण प्रकृति विशेष है ।

उससे अप्रत्याख्यानावरण क्रोध विशेष हीन है ॥ ९१ ॥

इसका कारण प्रकृति विशेष है ।

उससे अप्रत्याख्यानावरण मान विशेष हीन है ॥ ९२ ॥

इसका कारण प्रकृति विशेष है ।

उससे आभिनिबोधिक ज्ञानावरणीय और परिभोगान्तराय दोनों ही तुल्य होकर अनन्तगुणे हीन हैं ॥ ९३ ॥

क्योंकि, ये प्रकृति विशेष हैं ।

शंका- प्रकृतिका माहात्म्य किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान- उसका परिज्ञान सर्वघाती व देशघाती स्वरूपसे होता है । अप्रत्याख्यानावरण चतुष्क सर्वघाती है, क्योंकि, वह पूर्णतया देशसंयमका घात करता है। परन्तु आभिनिबोधिक-ज्ञानावरणीय और परिभोगान्तराय देशघाती हैं, क्योंकि, ये दोनों क्रमशः मतिज्ञान और

रणीयं परिभोगंतराइयं च देसघादि, मदिणाण-परिभोगाणमेगदेसघादित्तादो । तदो एदेसिं दोण्णं कम्माणमणुभागो अणंतगुणहीणो त्ति सिद्धं ।

चक्खुदंसणावरणीयमणंतगुणहीणं ॥ ९४ ॥

पयडिविसेसेण । एदस्स सत्तीए ऊणत्तं कधं णव्वदे ? किमिदि ण णव्वदे, आभिणिबोहियणाणावरणीय-परिभोगंतराइयाणं[1] व सव्वत्थ खओवसमस्स अणुवलंभादो । ण च थोवेसु चेव जीवेसु खओवसमं गंतूण अणंतजीवरासिं सव्वं चक्खिदियं सव्वं घाइदूण ट्ठिदस्स चक्खिदियावरणस्स सत्तीए ऊणत्तं, विरोहादो ? ण एस दोसो, आभिणिबोहियणाणावरणीयं जेण पंचिंदियणोइंदियपडिबद्धअसेसणाणघादयं (चक्खुदंसणावरणीयं) पुण चक्खुदंसणोवजोगमेत्तघादयं, तदो अप्पकज्जकरणादो चक्खुदंसणावरणीयसत्ती थोवेत्ति णव्वदे ।

सुदणाणावरणीयमचक्खुदंसणावरणीयं भोगंतराइयं च तिण्णि वि तुल्लाणि अणंतगुणहीणाणि ॥ ९५ ॥

....

परिभोगान्तरायके एक देशका घात करनेवाले हैं । इस कारण इन दोनों कर्मोंका अनुभाग अप्रत्याख्यानावरण मानके अनुभागकी अपेक्षा अनन्तगुणा हीन है, यह सिद्ध होता है ।

उनसे चक्षुदर्शनावरणीय प्रकृति अनन्तगुणी हीन है ॥ ९४ ॥

इसका कारण प्रकृतिविशेष है ।

शंका- उन दोनोंकी अपेक्षा इसकी शक्ति हीन है, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान- क्यों नहीं जाना जाता है अर्थात् अवश्य जाना जाता है, क्योंकि, आभिनिबोधिकज्ञानावरणीय और परिभोगान्तरायके समान चक्षुदर्शनावरणीयका सर्वत्र क्षयोपशम नहीं पाया जाता है ।

शंका- चूंकि चक्षुदर्शनावरणका थोडे ही जीवोंमें क्षयोपशम होता है इसके सिवा अनन्त जीवराशिमें वह पूर्ण रूपसे चक्षुरिन्द्रियका घातक है, अतः उसकी शक्ति हीन नहीं हो सकती, क्योंकि, ऐसा माननेमें विरोध आता है ?

समाधान- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, आभिनिबोधिक ज्ञानावरणीय चूंकि स्पर्शनादि पाँच इन्द्रिय और नोइन्द्रियसे सम्बन्ध रखनेवाले सब ज्ञानका घातक है, (परन्तु चक्षुदर्शनावरणीय) केवल चक्षुदर्शनोपयोग मात्रका घातक है, अतः अल्प कार्य करनेके कारण चक्षुदर्शनावरणीयकी शक्ति स्तोक है, यह जाना जाता है ।

श्रुतज्ञानावरणीय, अचक्षुदर्शनावरणीय और भोगान्तराय ये तीनों ही प्रकृतियाँ तुल्य होकर चक्षुदर्शनावरणीयसे अनन्तगुणी हीन हैं ॥ ९५ ॥

....

(१) प्रतिषु 'राइयाणं च सव्वत्थ' इति पाठः ।

सुदणाणावरणीयं नाम महाविसयं, परोक्खसरूवेण सव्वत्थ परिच्छेदिसुदणाणघायणे वावदत्तादो । सेसदोपयडिअणुभागो वि महल्लो चेव, सुदणाणावरणीयसमाणत्तादो । तदो एदेसिमणुभागेण चक्खुदंसणावरणीयअणुभागादो अणंतगुणहीणेण होदव्वमिदि महाविसयस्स अणुभागो महल्लो होदि, थोवविसयस्स अणुभागो थोवो होदि त्ति । एदमत्थं मोत्तूण एवं घेत्तव्वं । तं जहा--खवगसेडीए देसघादिबंधकरणे जस्स पुव्वमेव अणुभागबंधो देसघादी जादो तस्साणुभागो थोवो । जस्स पच्छा जादो तस्स बहुओ । एदासिं च अणुभागबंधो चक्खुदंसणावरणीयअणुभागबंधादो पुव्वमेव देसघादी जादो । तं जहा--मिच्छाइट्ठिमादिं कादूण जाव अणियट्टिअद्धाए संखेज्जा भागा ताव एदासिमणुभागबंधो सव्वघादी बज्झदि । पुणो तत्थ मणपज्जवणाणावरणीयं दाणंतराइयं च बंधेण देसघादिं करेदि । तदो उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण ओहिणाणावरणीयं ओहिदंसणावरणीयं लाहंतराइयं च तिण्णि वि बंधेण देसघादिं करेदि । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुदणाणावरणीयं अचक्खुदंसणावरणीयं भोगंतराइयं च तिण्णि वि बंधेण देसघादिं करेदि । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण चक्खुदंसणावरणीयं बंधेण देसघादिं करेदि । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण आभिणिबोहियणाणावरणीयं परिभोगंतराइयं च दो वि बंधेण देसघादिं करेदि । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण वीरियंतराइयं बंधेण देसघादिं करेदि त्ति । तेण चक्खुदंसणावरणीय--

....

शंका-- श्रुतज्ञानावरणका विषय महान् है, क्योंकि, वह परोक्ष स्वरूपसे सब पदार्थोंको जाननेवाले श्रुतज्ञानके घातनेमें प्रवृत्त है । शेष दो प्रकृतियोंका अनुभाग भी महान् ही है, क्योंकि, वह श्रुतज्ञानावरणके अनुभागके ही समान है । इस कारण इनका अनुभाग चक्षुदर्शनावरणीयके अनुभागकी अपेक्षा अनन्तगुणा होना चाहिये, क्योंकि, महान् विषयवाली प्रकृतिका अनुभाग महान् होता है और अल्प विषयवाली प्रकृतिका अनुभाग अल्प होता है ।

समाधान-- यदि ऐसा है तो इस अर्थको छोडकर ऐसा ग्रहण करना चाहिये । यथा-- क्षपकश्रेणिमें देशघाती बन्धकरणके समय जिसका अनुभागबन्ध पहले ही देशघाती हो गया है उसका अनुभाग स्तोक होता है और जिसका अनुभागबन्ध पीछे देशघाती होता है उसका अनुभाग बहुत होता है। इस नियमके अनुसार इन तीन प्रकृतियों का अनुभागबन्ध चक्षुदर्शनावरणीयके अनुभागबन्धसे पहले ही देशघाती हो जाता है । यथा-- मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरणकालके संख्यात बहुभाग तक इनका अनुभागबंध सर्वघाती बंधता है । फिर वहाँ मनःपर्यय ज्ञानावरण और दानान्तरायको बन्धकी अपेक्षा देशघाती रूप करता है । इससे आगे अन्तर्मुहूर्त जाकर अवधिज्ञानावरणीय, अवधिदर्शनावरणीय और लाभान्तराय इन तीनों प्रकृतियोंकी बन्धकी अपेक्षा देशघाती रूप करता है । पश्चात् अन्तर्मुहूर्त जाकर श्रुतज्ञानावरणीय, अचक्षुदर्शनावरणीय और भोगान्तराय इन तीनोंको बन्धकी अपेक्षा देशघाती रूप करता है । पश्चात् अन्तर्मुहूर्त जाकर चक्षुदर्शनावरणीयको बन्धकी अपेक्षा देशघाती करता है । पश्चात् अन्तर्मुहूर्त जाकर आभिनिबोधिक ज्ञानावरणीय और परिभोगान्तराय इन दोनों प्रकृतियोंको बन्धकी अपेक्षा देशघाती रूप करता है । पश्चात् अन्तर्मुहूर्त जाकर वीर्यान्तरायको बन्धकी अपेक्षा

अणुभागो एदासिं तिण्णमणुभागादो[1] अणंतगुणो । एसो अत्थो बारसण्णं देसघादिबंधपयडीणं सव्वत्थ[2] जोजेयव्वो ।

ओहिणाणावरणीयं ओहिदंसणावरणीयं लाहंतराइयं च तिण्णि वि तुल्लाणि अणंतगुणहीणाणि ।। ९६ ।।

कारणं पुव्वं परूविदमिदि णेह परूविज्जदे ।

मणपज्जवणाणावरणीयं थीणगिद्धी दाणंतराइयं च तिण्णि वि तुल्लाणि अणंतगुणहीणाणि ।। ९७ ।।

कारणं सुगमं ।

णवुंसयवेदो अणंतगुणहीणो ।। ९८ ।।

णोकसायत्तादो ।

अरदी अणंतगुणहीणा ।। ९९ ।।

कुदो ? पयडिविसेसेण । तं जहा–इट्टगावागसण्णिहो णवुंसयवेदोदओ, अरदो पुण अरमणमेत्तुप्पाइया । तेण अणंतगुणहीणा ।

....

देशघाती रुप करता है । इस कारण चक्षुदर्शनावरणीयका अनुभाग इन तीन प्रकृतियोंके अनुभागसे अनन्तगुणा है । इस अर्थकी बारह देशघाती बन्ध प्रकृतियोंके सम्बन्धमें सर्वत्र योजना करनी चाहिये ।

उनसे अवधिज्ञानावरणीय, अवधिदर्शनावरणीय और लाभान्तराय, ये तीनों ही तुल्य होकर अनन्तगुणी हीन हैं ।। ९६ ।।

इसका कारण पहले बतला आये हैं इसलिए यहां उसका कथन नहीं करते हैं।

उनसे मनः पर्यय ज्ञानावरणीय, स्त्यानगृद्धि और दानान्तराय ये तीनों ही तुल्य होकर अनन्तगुणी हीन हैं ।। ९७ ।।

इसका कारण सुगम है ।

उनसे नपुंसकवेद प्रकृति अनन्तगुणी हीन है ।। ९८ ।।

क्योंकि, वह नोकषाय है ।

उससे अरति अनन्तगुणी हीन है ।। ९९ ।।

क्योंकि, इनमें प्रकृतिगत विशेषता है । यथा–नपुंसक वेदका उदय ईटोंके पाकके समान है, परन्तु अरति तो मात्र नहीं रमनेरूप भावको उत्पन्न करनेवाली है, इस कारण वह नपुंसक वेदकी अपेक्षा अनन्तगुणी हीन है ।

....

(१) प्रतिषु 'अणंतगुणहीणो' इति पाठः । (२) अ–आ–का प्रतिषु 'सव्वत्थो' इति पाठः ।

सोगो अणंतगुणहीणो ।। १०० ।।

कुदो ? अरदिपुरंगमत्तादो । कधमरदिपुरंगमत्तं ? अरदीए विणा सोगाणुप्पत्तीए ।

भयमणंतगुणहीणं ।। १०१ ।।

भयउदयकालादो सोगुदयकालस्स महल्लत्तुवलंभादो । सोगो उक्कस्सेण छम्मासमेत्तो चेव, भयस्स कालो णेरइएसु तेत्तीससागरोवममेत्तो त्ति भयमणंतगुणं किण्ण जायदे ? ण णेरइएसु वि भयकालस्स अंत्तोमुहुत्तस्सेव उवलंभादो ।

दुगुंछा अणंतगुणहीणा ।। १०२ ।।

पयडिविसेसेण ।

णिद्दाणिद्दा अणंतगुणहीणा ।। १०३ ।।

कस्स वि जीवस्स कहिं मि उदयदंसणादो ।

पयलापयला अणंतगुणहीणा ।। १०४ ।।

लालासंदणेण थोवकालपडिबद्धचेयणाभावदंसणादो, णिद्दाणिद्दाए उदएण तदणुवलंभादो ।

णिद्दा अणंतगुणहीणा ।। १०५ ।।

....

उससे शोक अनन्तगुणा हीन है ।। १०० ।।

क्योंकि, वह अरतिपूर्वक होता है ।

शंका– वह अरतिपूर्वक कैसे होता है ?

समाधान– क्योंकि, अरतिके बिना शोक नहीं उत्पन्न होता है ।

उससे भय अनन्तगुणा हीन है ।। १०१ ।।

क्योंकि, भयके उदयकालकी अपेक्षा शोकका उदयकाल बहुत पाया जाता है ।

शंका– चूंकि शोक उत्कृष्टसे छह मास पर्यन्त ही होता है, परन्तु भयका काल नारकियोंमें तेतीस सागरोपम प्रमाण है, अतएव शोककी अपेक्षा भय अनन्तगुणा क्यों नहीं होता ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, नारकियोंमें भी भयका काल अन्तर्मुहूर्त मात्र ही उपलब्ध होता है ।

उससे जुगुप्सा अनन्तगुणी हीन है ।। १०२ ।।

इसका कारण प्रकृतिविशेष है ।

उससे निद्रानिद्रा अनन्तगुणी हीन है ।। १०३ ।।

क्योंकि, किसी भी जीवके कहीं पर ही उनका उदय देखा जाता है ।

उससे प्रचलाप्रचला अनन्तगुणी हीन है ।। १०४ ।।

क्योंकि, लार बहनेसे थोडे कालसे सम्बन्ध रखनेवाला चैतन्यका अभाव देखा जाता है, परन्तु निद्रानिद्राके उदयसे उसकी उपलब्धि नहीं होती ।

उससे निद्रा अनन्तगुणी हीन है ।। १०५ ।।

एदिस्से उदएण सचेयण व्व णिद्दुवलंभादो ।

पयला अणंतगुणहीणा ।। १०६ ।।

एदिस्से उदएण बोल्लंतस्स वट्ठाए वहंतस्स वा सीसस्स अइथोवसंचालदंसणादो ।

अजसकित्ती णीचागोदं च दो वि तुल्लाणि अणंतगुण-हीणाणि ।। १०७ ।।

कुदो ? साभावियादो । ण च सहाओ परपज्जणियोगारिहो ।

णिरयगई अणंतगुणहीणा ।। १०८ ।।

कुदो ? णेरइयभावणिव्वत्तयत्तादो ।

तिरिक्खगई अणंतगुणहीणा ।। १०९ ।।

कुदो ? णेरइयगई व्व तेत्तीससागरोवमफलुप्पायणसत्तीए अभावादो, णिरयगदीए इव एदिस्से दुक्खकारणत्ताभावादो वा ।

इत्थिवेदो अणंतगुणहीणो ।। ११० ।।

कुदो ? अरइगब्भमुम्मरग्गिसमदुक्खुप्पायणादो ।

पुरिसवेदो अणंतगुणहीणो ।। १११ ।।

कुदो ? तणग्गिसमथोवदुक्खुप्पायणादो ।

....

क्योंकि, इसके उदय से सचेतन के समान निद्रा उपलब्ध होती है ।

उससे प्रचला अनन्तगुणी हीन है ।। १०६ ।।

क्योंकि, इसके उदयसे बोलते हुए, बैठे हुए अथवा चलते हुए जीवके सिरका संचार बहुत स्तोक देखा जाता है ।

उससे अयशःकीर्ति और नीचगोत्र ये दोनों प्रकृतियाँ तुल्य होकर अनन्तगुणी हीन हैं ।। १०७ ।।

क्योंकि, ऐसा स्वभाव है, और स्वभाव दूसरोंके प्रश्नके योग्य नहीं होता ।

उनसे नरकगति अनन्तगुणी हीन है ।। १०८ ।।

क्योंकि, वह नारक पर्यायको उत्पन्न करानेवाली है ।

उससे तिर्यग्गति अनन्तगुणी हीन है ।। १०९ ।।

क्योंकि, उसमें नरकगतिके समान तेतीस सागरोपम कालतक फल उत्पन्न कराने की शक्ति नहीं है, अथवा वह नरकगतिके समान दुःखकी कारण नहीं है ।

उससे स्त्रीवेद अनन्तगुणा हीन है ।। ११० ।।

क्योंकि, वह अरतिगर्भित कण्डेकी आगके समान दुःखोत्पादक है ।

उससे पुरुषवेद अनन्तगुणा हीन है ।। १११ ।।

क्योंकि, वह तृणाग्निके समान थोडे दुःखको उत्पन्न करनेवाला है ।

रदी अणंतगुणहीणा ॥ ११२ ॥

कुदो ? माया-लोभ-तिवेदपुरंगमत्तादो ।

हस्समणंतगुणहीणं ॥ ११३ ॥

कुदो ? रदिपुरंगमत्तादो ।

देवाउअमणंतगुणहीणं ॥ ११४ ॥

कुदो ? साभावियादो ।

णिरयाउअमणंतगुणहीणं ॥ ११५ ॥

कुदो ? देवाउअं पेक्खिदूण अप्पसत्थभावादो ।

मणुसाउअमणंतगुणहीणं ॥ ११६ ॥

णिरयाउअस्सेव मणुसाउअस्स दीहकालमुदयाणुवलंभादो । णिरयाउआदो मणुसाउअं पसत्थमिदि अणंतगुणं किण्ण जायदे ? ण, पसत्थभावेण जणिदाणुभागादो दीहकालोदय-णिबंधणाणुभागस्स पाधण्णियादो ।

तिरिक्खाउअमणंतगुणहीणं ॥ ११७ ॥

कुदो ? मणुस्साउआदो तिरिक्खाउअस्स अप्पसत्थत्तदंसणादो ।

एवमुक्कस्सओ चउसट्ठिपदियो महादंडओ कदो भवदि ।

....

उससे रति अनन्तगुणी हीन है ॥ ११२ ॥

क्योंकि, वह माया, लोभ और तीन वेद पूर्वक होती है ।

उससे हास्य अनन्तगुणा हीन है ॥ ११३ ॥

क्योंकि, वह रतिपूर्वक होता है ।

उससे देवायु अनन्तगुणी हीन है ॥ ११४ ॥

क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

उससे नारकायु अनन्तगुणी हीन है ॥ ११५ ॥

कारण कि वह देवायुकी अपेक्षा अप्रशस्त है ।

उससे मनुष्यायु अनन्तगुणी हीन है ॥ ११६ ॥

कारण कि नारकायुके समान मनुष्यायुका बहुत समय तक उदय नहीं पाया जाता ।

शंका-चूँकि नारकायुकी अपेक्षा मनुष्यायु प्रशस्त है, अतः वह उससे अनन्तगुणी क्यों नहीं होती ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, यहाँ प्रशस्ततासे उत्पन्न अनुभागकी अपेक्षा बहुत समय तक रहनेवाले उदय निमित्तिक अनुभागकी प्रधानता है ।

उससे तिर्यगायु अनन्तगुणी हीन है ॥ ११७ ॥

कारण कि मनुष्यायुकी अपेक्षा तिर्यगायुके अप्रशस्तता देखी जाती है ।

इस प्रकार उत्कृष्ट चौंसठ पदवाला महादण्डक समाप्त हुआ ।

संपहि एदेण अप्पाबहुएण सूचिदउत्तरपयडिसत्थाणुक्कस्साणुभागअप्पाबहुअं वत्तइस्सामो । तं जहा-सव्वतिव्वाणुभागं केवलणाणावरणीयं । आभिणिबोहियणाणावरणीयं अणंतगुणहीणं । सुदणाणावरणीयं अणंतगुणहीणं । ओहिणाणावरणीयमणंतगुणहीणं । मणपज्जवणाणावरणीयमणंतगुणहीणं।

सव्वतिव्वाणुभागं केवलदंसणावरणीयं । चक्खुदंसणावरणीयं अणंतगुणहीणं । अचक्खुदंसणावरणीयमणंतगुणहीणं । ओहिदंसणावरणीयमणंतगुणहीणं । थीणगिद्धी अणंतगुणहीणा । णिद्दाणिद्दा अणंतगुणहीणा । पयलापयला अणंतगुणहीणा । णिद्दा अणंतगुणहीणा । पयला अणंतगुणहीणा ।

सव्वतिव्वाणुभागं सादमसादमणंतगुणहीणं ।

सव्वतिव्वाणुभाणं मिच्छत्तं । अणंताणुबंधिलोभो अणंतगुणहीणो । माया विसेसहीणा। कोधो विसेसहीणो । माणो विसेसहीणो । संजलणाए लोभो अणंतगुणहीणो । माया विसेसहीणा। कोधो विसेसहीणो । माणो विसेसहीणो । एवं पच्चक्खाणचदुक्का-पच्चक्खाणचदुक्कस्स च वत्तव्वं । णवुंसयवेदो अणंतगुणहीणो । अरदी अणंतगुणहीणा । सोगो अणंतगुणहीणो । भयमणंतगुणहीणं । दुगुंछा अणंतगुणहीणा । इत्थिवेदो

....

अब इस अल्पबहुत्वसे सूचित होनेवाला उत्तर प्रकृतियोंका उत्कृष्ट अनुभागविषयक स्वस्थान अल्पबहुत्व कहते हैं । यथा-केवलज्ञानावरण सबसे तीव्र अनुभागसे युक्त है । उससे आभिनिबोधिक ज्ञानावरणीय अनन्तगुणी हीन है। उससे श्रुतज्ञानावरणीय अनन्तगुणी हीन हैं । उससे अवधिज्ञानावरणीय अनन्तगुणी हीन है । उससे मनःपर्ययज्ञानावरणीय अनन्तगुणी हीन है ।

केवलदर्शनावरणीय सबसे तीव्र अनुभागसे युक्त है । उससे चक्षुदर्शनावरणीय अनन्तगुणी हीन है। उससे अचक्षुदर्शनावरणीय अनन्तगुणी हीन है । उससे अवधिदर्शनावरणीय अनन्तगुणी हीन है। उससे स्त्यानगृद्धि अनन्तगुणी हीन है। उससे निद्रानिद्रा अनन्तगुणी हीन है। उससे प्रचलाप्रचला अनन्तगुणी हीन है । उससे निद्रा अनन्तगुणी हीन है । उससे प्रचला अनन्तगुणी हीन है ।

सातावेदनीय सबसे तीव्र अनुभागसे युक्त है । उससे असातावेदनीय अनन्तगुणी हीन है ।

मिथ्यात्व प्रकृति सबसे तीव्र अनुभागसे युक्त है । उससे अनन्तानुबन्धी लोभ अनन्तगुणा हीन है। उससे अनन्तानुबन्धी माया विशेष हीन है । उससे अनन्तानुबन्धी क्रोध विशेष हीन है । उससे अनन्तानुबन्धी मान विशेष हीन है । उससे संज्वलनलोभ अनन्तगुणा हीन है । उससे संज्वलन माया विशेष हीन है । उससे संज्वलन क्रोध विशेष हीन है । उससे संज्वलन मान विशेष हीन है । इसी प्रकार प्रत्याख्यानावरण चतुष्क और अप्रत्याख्यानावरण चतुष्कके विषयमें कहना चाहिये । अप्रत्याख्यानावरण मानसे नपुंसकवेद अनन्तगुणा हीन है । उससे अरति अनन्तगुणी हीन है । उसके शोक अनन्तगुणा हीन है । उससे भय अनन्तगुणा हीन है । उससे जुगुप्सा

अणंतगुणहीणो । पुरिसवेदो अणंतगुणहीणो । रदी अणंतगुणहीणा । हस्समणंतगुणहीणं ।

सव्वतिव्वाणुभागं देवाउअं । णिरयाउअमणंतगुणहीणं । मणुसाउअमणंतगुणहीणं । तिरिक्खाउअमणंतगुणहीणं ।

सव्वतिव्वाणुभागा देवगई । मणुसगई अणंतगुणहीणा । णिरयगई अणंतगुणहीणा । तिरिक्खगई अणंतगुणहीणा ।

सव्वतिव्वाणुभागा पंचिंदियजादी । एइंदियजादी अणंतगुणहीणा । बेइंदियजादी अणंतगुणहीणा । तेइंदियजादी अणंतगुणहीणा । चउरिंदियजादी अणंतगुणहीणा ।

सव्वतिव्वाणुभागं कम्मइयसरीरं । तेजइयसरीरं अणंतगुणहीणं । आहारसरीरमणंतगुणहीणं । वेउव्वियसरीरमणंतगुणहीणं । ओरालियसरीरमणंतगुणहीणं ।

सव्वतिव्वाणुभागं समचउरससंठाणं हुँडसंठाणमणंतगुणहीणं । वामणसंठाणमणंतगुणहीणं । खुज्जसंठाणमणंतगुणहीणं । सादियसंठाणमणंतगुणहीणं । णग्गोधसंठाणमणंतगुणहीणं ।

सव्वतिव्वाणुभागमाहारसरीरअंगोवंगं । वेउव्वियसरीरअंगोवंगमणंतगुणहीणं। ओरालियसरीरमंगोवंगमणंतगुणहीणं ।

....

अनन्तगुणी हीन है । उससे स्त्रीवेद अनन्तगुणा हीन है । उससे पुरुषवेद अनन्तगुणा हीन है। उससे रति अनन्तगुणी हीन है। उससे हास्य अनन्तगुणा हीन है ।

देवायु सबसे तीव्र अनुभागसे युक्त है । उससे नारकायु अनन्तगुणी हीन है । उससे मनुष्यायु अनन्तगुणी हीन है । उससे तिर्यगायु अनन्तगुणी हीन है ।

देवगति सबसे तीव्र अनुभागसे युक्त है । उससे मनुष्यगति अनन्तगुणी हीन है । उससे नरकगति अनन्तगुणी हीन है । उससे तिर्यग्गति अनन्तगुणी हीन है ।

पंचेन्द्रिय जाति सबसे तीव्र अनुभागसे युक्त है । उससे एकेन्द्रिय जाति अनन्तगुणी हीन है । उससे द्वीन्द्रिय जाति अनन्तगुणी हीन है । उससे त्रीन्द्रिय जाति अनन्तगुणी हीन है। उससे चतुरिन्द्रिय जाति अनन्तगुणी हीन है ।

कार्मण शरीर सबसे तीव्र अनुभागसे युक्त है । उससे तैजस शरीर अनन्तगुणा हीन है । उससे आहारक शरीर अनन्तगुणा हीन है । उससे वैक्रियिक शरीर अनन्तगुणा हीन है । उससे औदारिक शरीर अनन्तगुणा हीन है ।

समचतुरस्र संस्थान सबसे तीव्र अनुभागसे युक्त है। उससे हुंडक संस्थान अनन्तगुणा हीन है। उससे वामन संस्थान अनन्तगुणा हीन है । उससे कुब्जक संस्थान अनन्तगुणा हीन है । उससे स्वाति संस्थान अनन्तगुणा हीन है । उससे न्यग्रोधपरिमण्डल संस्थान अनन्तगुणा हीन है ।

आहारक शरीरांगोपांग सबसे तीव्र अनुभागसे युक्त है । उससे वैक्रियिक शरीरांगोपांग अनन्तगुणा हीन है । उससे औदारिक शरीरांगोपांग अनन्तगुणा हीन है ।

संघडणाणं संठाणभंगो । सव्वतिव्वाणुभागं[1] पसत्थ वण्णचउक्कमप्पसत्थवण्ण चउक्कमणंतगुणहीणं । [1]जहा गई तहाणुपुव्वी । (सव्वतिव्वाणु० अगुरु० उस्सासं अणंतगुणहीणं । परघाद० अणंतगुणहीणं । उव० अणंतगुणहीणं) एत्तो सव्वजुगलाणं सव्वतिव्वाणि पसत्थाणि। अप्पसत्थाणि पडिवक्खाणि अणंतगुणहीणाणि ।)

एत्तो सव्वजुगलाणं सव्वतिव्वाणुभागाणि पसत्थाणि । अप्पसत्थाणि पडिवक्खाणि अणंतगुणहीणाणि ।

सव्वतिव्वाणुभागं उच्चागोदं । णीचागोदमणंतगुणहीणं । सव्वतिव्वाणुभागं विरियंतराइयं । हेट्ठा कमेण दाणंतराइया अणंतगुणहीणा ।

एवं सत्थाणप्पाबहुगं समत्तं ।

संज-मण-दाणमोही लाभं सुदचक्खु-भोग चक्खुं च ।
आभिणिबोहिय परिभोग विरिय णव णोकसायाइं ।। ४ ।।

'संज' त्ति उत्ते चत्तारि वि संजलणाणि घेत्तव्वाणि । 'मण[2]-दाणं' इदि वुत्ते मणपज्जयणाणावरणीयस्स दाणंतराइयस्स च गहणं । 'ओहि' त्ति वुत्ते ओहिणाणावरणीयं ओहिदंसणावरणीयं च घेत्तव्वं । 'लाभ' णिद्देसो लाभंतराइयगहणट्ठो । 'सुद' णिद्देसो सुदणाणावरणीयपण्ण-वणट्ठो ।

....

संहननोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा संस्थानोंके समान है । प्रशस्त वर्णचतुष्क सबसे तीव्र अनुभागसे युक्त है । उससे अप्रशस्त वर्णचतुष्क अनन्तगुणा हीन है । आनुपूर्वीकी प्ररूपणा गति नामकर्मके समान है । अगुरुलघु सबसे तीव्र अनुभागवाला है । उससे उच्छ्वास अनन्तगुणाहीन है । उससे परघात अनन्तगुणाहीन है । उससे उपघात नामकर्म अनन्तगुणाहीन है । सब युगलोंमें प्रशस्त प्रकृतियोंका अनुभाग तीव्र है । उससे अप्रशस्त प्रकृतियोंका अनुभाग अनन्तगुणा हीन है ।

आगे त्रस-स्थावरादि सब युगलोंमें प्रशस्त प्रकृतियां सबसे तीव्र अनुभागसे युक्त हैं । उनकी प्रतिपक्षभूत अप्रशस्त प्रकृतियां अनन्तगुणी हीन हैं ।

उच्चगोत्र सबसे तीव्र अनुभागसे युक्त है । उससे नीचगोत्र अनन्तगुणा हीन है । वीर्यान्तराय सबसे तीव्र अनुभागसे युक्त है । उसके नीचे क्रमशः दानान्तरायादिक अनन्तगुणे हीन हैं ।

इस प्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

संज्वलनचतुष्क, मनःपर्ययज्ञानावरण, दानान्तराय, अवधिज्ञानावरण, और अवधिदर्शनावरण, लाभान्तराय, श्रुतज्ञानावरण, अचक्षुदर्शनावरण, भोगान्तराय, चक्षुदर्शनावरण, आभिनिबोधिकज्ञानावरण, परिभोगान्तराय, वीर्यान्तराय और नौ नोकषाय ये प्रकृतियां उत्तरोत्तर अनन्तगुणी हैं ।। ४ ।।

और अवधिदर्शनावरणीय का 'संज' ऐसा कहनेपर चारों ही संज्वलन कषायोंका ग्रहण करना चाहिये। मण-दाणं यह कहनेपर मनःपर्ययज्ञानावरणीय और दानान्तरायका ग्रहण करना चाहिये । 'ओहि' ऐसा कहनेपर अवधिज्ञानावरणीयका ग्रहण करना चाहिऐ । 'लाभ' पदका निर्देश लाभान्तरायका ग्रहण करनेके लिये किया है । श्रुतज्ञानावरणीयका ज्ञान करानेके लिये 'सुद' पदका निर्देश किया है । अचक्षु-

....

(१) अप्रतौ 'त्रुटितोऽत्र पाठः मप्रतौ' सव्वतिव्वाणुभागं पसस्थवण्णं चउक्कमणंतगु०' इति पाठः ।
(२) अप्रतौ 'महा' इति पाठः ।

'अचक्खु' णिद्देसो अचक्खुदंसणावरणीयगहणणिमित्तो । 'भोग[1]' णिद्देसो भोगंतराइयस्स परुवओ । 'चक्खुं चेदि' णिद्देसो चक्खुदंसणावरणीयग्गहणणिमित्तो । किमट्ठं 'च' सद्दुच्चारणं कीरदे ? सुदणाणावरणीय-अचक्खुदंसणावरणीय-भोगंतराइयं च एदाणि तिण्णि वि कम्माणि जहा अणुभागेण अण्णोण्णं समाणाणि तहा चक्खुदंसणावरणीयं ण होदि त्ति जाणावणट्ठं कीरदे । 'आभिणिबोहिय' णिद्देसेण आभिणिबोहियणाणावरणीयं घेत्तव्व। 'परिभोग' वयणेण परिभोगंतराइयं घेत्तव्वं । 'णं व च' इदि चसद्देण एदासिमणंतरादो पयडीणमणुभागो सरिसो त्ति सूचिदो । 'विरिय' इत्ति भणिदे विरियंतराइयस्स गहणं । 'णव णोकसाया' त्ति वुत्ते णवण्णं णोकसायाणं गहणं कायव्वं । एत्थ सव्वत्थ अणंतगुणसद्दस्स अज्झाहारो कायव्वो ।

के-प-णि-अट्ठ-त्तिय-अण-मिच्छा-ओ-वे-तिरिक्ख-मणुसाऊ ।
तेयाकम्मसरीरं तिरिक्ख-णिरय-मणुव-देवगई[2] ।। ५ ।।

केवलणाणावरणीय-केवलदंसणावरणीयाणं गहणट्ठं 'के' इति णिद्देसो कदो । ताणि च दो वि सरिसाणि त्ति जाणावणट्ठं 'के' इदि एगसद्देण णिद्दिट्ठाणि । 'प' इदि उत्ते

....

दर्शनावरणीयका ग्रहण करनेके निमित्त 'अचक्खु' पदका निर्देश किया है । 'भोग' पदका निर्देश भोगान्तरायका प्ररूपक है । 'चक्खुं च' यह निर्देश चक्षुदर्शनावरणीयका ग्रहण करनेके निमित्त है ।

शंका-- 'चक्खुं च' यहाँ 'च' शब्दका उच्चारण किसलिये किया है ?

समाधान- जिस प्रकार श्रुतज्ञानावरणीय, अचक्षुदर्शनावरणीय और भोगान्तराय ये तीन प्रकृतियाँ अनुभागकी अपेक्षा परस्पर समान हैं उस प्रकार चक्षुदर्शनावरणीय समान नहीं है, यह जतलानेके लिये 'च' शब्दका निर्देश किया है ।

'आभिणिबोहिय' पदके निर्देशसे आभिनिबोधिकज्ञानावरणीयका ग्रहण करना चाहिये । 'परिभोग' इस वचनसे परिभोगान्तरायका ग्रहण करना चाहिये । 'णव च' यहाँ किये गये 'च' शब्दके निर्देशसे इन प्रकृतियोंसे अव्यवहित प्रकृतियोंका अनुभाग सदृश है, यह सूचना की गई है । 'विरिय' कहनेपर वीर्यान्तरायका ग्रहण किया गया है । 'णव णोकसाया' ऐसा कहनेपर नौ नोकषायोंका ग्रहण करना चाहिये । यहाँ सर्वत्र 'अनन्तगुण' शब्दका अध्याहार करना चाहिये ।

केवलज्ञानावरण व केवलदर्शनावरण, प्रचला, निद्रा, आठ कषाय, निद्रानिद्रा आदि तीन, अनन्तानुबन्धिचतुष्क, मिथ्यात्व, औदारिक शरीर, वैक्रियिक शरीर, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तैजस शरीर, कार्मण शरीर, तिर्यग्गति, नरकगति, मनुष्यगति और देवगति ये प्रकृतियाँ उत्तरोत्तर अनुभागकी अपेक्षा अनन्तगुणी हैं ।। ५ ।।

केवलज्ञानावरणीय और केवलदर्शनावरणीय का ग्रहण करनेके लिये 'के' ऐसा निर्देश किया है । वे दोनों ही प्रकृतियाँ सदृश हैं, यह जतलानेके लिये 'के' इस एक ही शब्दके द्वारा

....

(१) अ-आ-क-प्रतिषु 'ओघ' इति पाठः । (२) अ-का-प्रत्याः 'देव-मणुवगई' इति पाठः ।

पयला घेत्तव्वा, णामेगदेसादो वि णामिल्लपडिवत्तिदंसणादो । 'णि' इदि वुत्ते णिद्दाए गहणं । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । 'अट्ठ' इदि वुत्ते अट्ठकसाया घेत्तव्वा । 'तिय' त्ति भणिदे थीणगिद्धितियं घेत्तव्वं । कुदो ? आइरियोवदेसादो । 'अण' इदि णिद्देसो अणंताणुबंधिचउक्कगहणणिमित्तो । 'मिच्छा' णिद्देसो मिच्छत्तस्स गाहओ । 'ओ' इदि वुत्ते ओरालियसरीरं घेत्तव्वं । ओहिणाणं किण्ण घेप्पदे ? ण, तस्स पुव्वं परूविदत्तादो । 'वे' इदि भणिदे वेउव्वियसरीरस्स गहणं ण अण्णस्स, असंभवादो । तिरिक्ख-मणुसाऊ'[1] इदि भणिदे दोण्णमाउआणं गहणं, आउअसद्दस्स पादेक्कमभिसंबंधादो । 'तेया-कम्मइयसरीरं' इदि वुत्ते तेजइय-कम्मइयसरीराणं गहणं । 'तिरिक्ख-णिरय-मणुव-देवगदि' त्ति भणिदे चत्तारिगदीओ घेत्तव्वाओ, गइसद्दस्स पादेक्कमभिसंबंधादो ।

णीचागोदं अजसो असादमुच्चं जसो तहा सादं ।
णिरयाऊ देवाऊ आहारसरीरणामं च ॥ ६ ॥

एसा गाहा सुगमा ।

....

उन दोनोंका निर्देश किया गया हैं । 'प' ऐसा कहनेपर प्रचलाका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, नामके एकदेशसे भी नामवालेका बोध होता हुआ देखा जाता है । 'नि' इस निर्देशसे निद्राका ग्रहण करना चाहिये । कारण पहलेके समान कहना चाहिये । 'अट्ठ' ऐसा कहनेपर प्रत्याख्यानावरणचतुष्क और अप्रत्याख्यानावरणचतुष्क इन आठ कषायोंका ग्रहण करना चाहिये । 'तिय' कहनेपर स्त्यानगृद्धित्रयका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, ऐसा आचार्योंका उपदेश है । 'अण' यह निर्देश अनन्तानुबन्धिचतुष्कका ग्रहण करनेके निमित्त है । 'मिच्छा' शब्दका निर्देश मिथ्यात्वका ग्राहक है । 'ओ' कहनेपर औदारिक शरीरका ग्रहण करना चाहिए ।

शंका– 'ओ' कहनेपर अवधिज्ञानावरणका ग्रहण क्यों नहीं किया जाता है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, उसका पहले कथन कर, आये हैं ।

'वे' ऐसा कहनेपर वैक्रियिक शरीरका ग्रहण करना चाहिये, अन्यका नहीं, क्योंकि, उससे अन्यका ग्रहण करना सम्भव ही नहीं है । 'तिरिक्ख-मणुसाऊ' ऐसा कहनेपर तिर्यगायु और मनुष्यायु इन दो आयुओंका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, आयु शब्दका प्रत्येकके साथ सम्बन्ध है । 'तेया-कम्मसरीरं' ऐसा कहनेपर तैजस और कार्मण शरीरका ग्रहण करना चाहिये । 'तिरिक्ख-णिरय-मणुव-देवगई' ऐसा कहनेपर चारों गतियोंका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, गति शब्दका सम्बन्ध प्रत्येकके साथ है ।

नीचगोत्र, अयशःकीर्ति, असातावेदनीय, उच्चगोत्र, यशःकीर्ति तथा साता-वेदनीय, नारकायु, देवायु और आहारशरीर, ये प्रकृतियां उत्तरोत्तर अनन्तगुणी हैं । ६ ।

यह गाथा सुगम है ।

....

(१) अप्रतौ 'तिरिक्खुवणुसाऊ' इति पाठः ।

एत्तो जहण्णओ चउसट्ठिपदिओ महादंडओ कायव्वो भवदि ॥ ११८ ॥

पुव्विल्लप्पाबहुएण जहण्णेण सूचिदचउसट्ठिपदियमप्पाबहुगं भणिस्सामो ।

सव्वमंदाणुभागं लोभसंजलणं ॥ ११९ ॥

अणियट्टिचरिमसमयबंधग्गहणादो । सुहमसांपराइयचरिमसमयलोभो सुहुमकिट्टिसरूवो किण्ण घेप्पदे ? ण, बंधाधियारे संतग्गहणाणुववत्तीदो । ण वेयणाए संतं चेव परूविज्जदे, बंध-संताणं दोण्णं पि परूवयत्तादो । एदाणि चउसट्ठिपदियाणि जहण्णुक्कस्सप्पाबहुगाणि बंधं चेव अस्सिदूण अवट्ठिदाणि । तं कधं णव्वदे ? महाबंधसुत्तुवइट्ठत्तादो ।

मायासंजलणमणंतगुणं ॥ १२० ॥

अणियट्टिचरिमसमयादो हेट्ठा अंतोमुहुत्तमोदरियट्ठिदमायाकसायचरिमाणुभागबंधग्गहणादो । कुदो एदं णव्वदे ? अणियट्टिचरिमाणुभागबंधादो दुचरिमाणुभागबंधो अणंतगुणो । तत्तो तिचरिमाणुभागबंधो अणंतगुणो । एवं सव्वत्थ अणियट्टिकालब्भंतरे

....

आगे चौंसठ पदवाला जघन्य महादण्डक करने योग्य है ॥ ११८ ॥

पूर्वोक्त जघन्य अल्पबहुत्वसे सूचित चौंसठ पदवाले अल्पबहुत्वको कहते हैं ।

संज्वलनलोभ सबसे मन्द अनुभागसे युक्त है ॥ ११९ ॥

क्योंकि, अनिवृत्तिकरणके अन्तिम समय सम्बन्धी बन्धका यहाँ ग्रहण किया गया है ।

शंका– सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्म कृष्टि स्वरूप लोभका ग्रहण क्यों नहीं किया जाता है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, बन्धके अधिकारमें सत्त्वका ग्रहण करना नहीं बन सकता है । वेदनामें केवल सत्त्वका ही कथन नहीं किया जा रहा है, क्योंकि, वह बन्ध और सत्व दोनोंका ही प्ररूपक है । ये चौंसठ पदवाले जघन्य व उत्कृष्ट अल्पबहुत्व बन्धका आश्रय करके ही अवस्थित हैं ।

शंका– यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान– यह महाबन्ध सूत्रके उपदेशसे जाना जाता है ।

उससे माया संज्वलन अनन्तगुणा है ॥ १२० ॥

क्योंकि, अनिवृत्तिकरणके अन्तिम समयसे नीचे अन्तर्मुहूर्त उतर कर स्थित माया कषायके अनुभागबन्धका यहाँ ग्रहण किया है ।

शंका– यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान– अनिवृत्तिकरणके अन्तिम समय सम्बन्धी अनुभागबन्धकी अपेक्षा उसका द्विचरम समय संबंधी अनुभागबन्ध अनन्तगुणा है । उससे त्रिचरण ममय सम्बन्धी अनुभाग–

पुव्विल्लेहिंतो पच्छा देसघादित्तमुववण्णत्तादो णव्वदे ।

सुदणाणावरणीयं अचक्खुदंसणावरणीयं भोगंतराइयं च तिण्णि वि तुल्लाणि अणंतगुणाणि ।। १२५ ।।

कदो ? पयडिविसेसादो । सो कुदो णव्वदे ? पच्छा देसघादिबंधजोगादो ।

चक्खुदंसणावरणीयमणंतगुणं ।। १२६ ।।

कारणं सुगमं ।

आभिणिबोहियणाणावरणीयं परिभोगंतराइयं च दो वि तुल्लाणि अणंतगुणाणि ।। १२७ ।।

सुगमं ।

विरियंतराइयमणंतगुणं ।। १२८ ।।

एदं पि सुगमं ।

पुरिसवेदो अणंतगुणो ।। १२९ ।।

विरियंतराइयस्स अणुभागो देसघादी एगट्ठाणियो, पुरिसवेदस्स वि अणुभागो

....

कि ''जिन प्रकृतियोंका अनुभागबन्ध पूर्वमें देशघाती हो जाता है उनका अनुभाग स्तोक होता है, तथा जिनका अनुभागबन्ध पीछे देशघाती होता है उनका अनुभाग बहुत होता है ।'' उसीसे वह जाना जाता है ।

श्रुतज्ञानावरणीय, अचक्षुदर्शनावरणीय और भोगान्तराय ये तीनों ही प्रकृतियां तुल्य होकर उनसे अनन्तगुणी हैं ।। १२५ ।।

इसका कारण प्रकृतिविशेष है ।

शंका-- वह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- चूंकि इन प्रकृतियोंका अनुभागबन्ध पीछे देशघातित्वको प्राप्त होता है अतः इसीसे उसका निश्चय हो जाता है ।

उनसे चक्षुदर्शनावरणीय अनन्तगुणी है ।। १२६ ।।

इसका कारण सुगम है ।

उससे आभिनिबोधिक ज्ञानावरणीय और परिभोगान्तराय ये दोनों ही प्रकृतियां तुल्य होकर अनन्तगुणी हैं ।। १२७ ।।

यह सूत्र सुगम है ।

उनसे वीर्यान्तराय अनन्तगुणा है ।। १२८ ।।

यह सूत्र भी सुगम है ।

उससे पुरुषवेद अनन्तगुणा है ।। १२९ ।।

वीर्यान्तरायका अनुभाग देशघाती एकस्थानीय है तथा पुरुषवेदका भी अनुभाग इसी

एरिसो चेव । किं तु अंतोमुहुत्तं हेट्ठा ओदरिय बद्धो तेण अणंतगुणहीणो जादो ।

हस्समणंतगुणं ॥ १३० ॥

अपुव्वकरणचरिमसमयव्वघादिविट्ठाणियजहण्णाणुभागबंधग्गहणादो ।

रदी अणंतगुणा ॥ १३१ ॥

तप्पुरंगमत्तादो ।

दुगुंछा अणंतगुणा ॥ १३२ ॥

दोण्णं पयडीणं अपुव्वकरणचरिमसमए चेव जदि वि जहण्णबंधो जादो तो वि रदीदो दुगुंछा अणंतगुणा, पयडिविसेसमस्सिदूण संसारावत्थाए सव्वत्थ तहावट्ठाणादो ।

भयमणंतगुणं ॥ १३३ ॥

पयडिविसेसेण ।

सोगो अणंतगुणो ॥ १३४ ॥

कुदो ? अपुव्वकरणविसोहीदो अणंतगुणहीणविसोहिणा पमत्तसंजदेण बद्धजहण्णाणुभागग्गहणादो ।

अरदी अणंतगुणा ॥ १३५ ॥

....

प्रकारका है । परन्तु वह चूँकि अन्तर्मुहूर्त पीछे जा कर बांधा गया है अतः वह अनन्तगुणा हीन है ।

उससे हास्य अनन्तगुणा है ॥ १३० ॥

कारण कि यहाँ अपूर्वकरणके अन्तिम समय सम्बन्धी सर्वघाती द्विस्थानीय जघन्य अनुभागबन्धका ग्रहण किया गया है ।

उससे रति अनन्तगुणी है ॥ १३१ ॥

कारण कि वह हास्यपूर्वक होती है ।

उससे जुगुप्सा अनन्तगुणी है ॥ १३२ ॥

यद्यपि रति और जुगुप्सा इन दोनों प्रकृतियोंका अपूर्वकरणके अन्तिम समय में ही जघन्य बन्ध हो जाता है तो भी रतिकी अपेक्षा जुगुप्सा अनन्तगुणी है, क्योंकि, प्रकृतिविशेषका आश्रय करके संसार अवस्थामें सर्वत्र इसी प्रकार की स्थिति है ।

उससे भय अनन्तगुणा है ॥ १३३ ॥

इसका कारण प्रकृतिविशेष है ।

उससे शोक अनन्तगुणा है ॥ १३४ ॥

कारण यह है कि अपूर्वकरणकी विशुद्धिकी अपेक्षा अनन्तगुणी हीन विशुद्धिवाले प्रमत्त संयतके द्वारा बांधे गये जघन्य अनुभागका यहाँ ग्रहण किया है ।

उससे अरति अनन्तगुणी है ॥ १३५ ॥

साभावियादो ।

इत्थिवेदो अणंतगुणो ।। १३६ ।।

पमत्तसंजदविसोहीदो अणंतगुणहीणसव्वविसुद्धमिच्छाइट्ठिणा बद्धइत्थिवेदजहण्णाणुभागग्गहणादो ।

णवुंसयवेदो अणंतगुणो ।। १३७ ।।

मिच्छाइट्ठिणा सव्वविसुद्धेण संजमाहिमुहेण बद्धजहण्णाणुभागग्गहणादो ।

केवलणाणावरणीयं केवलदंसणावरणीयं च दो वि तुल्लाणि अणंतगुणाणि ।। १३८ ।।

एदारिसं दोण्णं पि पयडीणं सुहुमसांपराइयचरिमसमए अंतोमुहुत्तमणंतगुणहाणी गंतूण जहण्णाणुभागबंधो जदि वि जादो तो वि मिच्छाइट्ठिणा सव्वविसुद्धेण बद्धणवुंसयवेदजहण्णाणुभागबंधादो अणंतगुणो । कुदो ? साभावियादो ।

पयला अणंतगुणा ।। १३९ ।।

अपुव्वकरणेण सगद्धाए पढमसत्तमभागे वट्टमाणेण चरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स विसोहीदो अणंतगुणहीणविसोहिणा बद्धत्तादो ।

....

क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

उससे स्त्रीवेद अनन्तगुणा है ।। १३६ ।।

कारण यह है कि यहाँ प्रमत्तसंयतकी विशुद्धिकी अपेक्षा अनन्तगुणी हीन विशुद्धि युक्त सर्वविशुद्ध मिथ्यादृष्टि जीवके द्वारा बांधे गये स्त्रीवेदके जघन्य अनुभागका ग्रहण किया है ।

उससे नपुंसकवेद अनन्तगुणा है ।। १३७ ।।

कारण कि संयमके अभिमुख हुए सर्वविशुद्ध मिथ्यादृष्टिके द्वारा बांधे गये जघन्य अनुभागका ग्रहण किया है ।

उससे केवलज्ञानावरणीय और केवलदर्शनावरणीय ये दोनों ही प्रकृतियाँ तुल्य होकर अनन्तगुणी हैं ।। १३८ ।।

यद्यपि इन दोनों ही प्रकृतियोंका अन्तर्मुहूर्तकाल तक अनन्तगुणी हानि होकर सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समयमें जघन्य अनुभागबन्ध होता है तो भी सर्वविशुद्ध मिथ्यादृष्टिके द्वारा बांधे गये नपुंसकवेदके जघन्य अनुभागबन्धकी अपेक्षा वह अनन्तगुणा है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

उनसे प्रचला अनन्तगुणी है ।। १३९ ।।

क्योंकि, वह अपने कालके सात भागोंमेंसे प्रथम भाग में वर्तमान और अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिककी विशुद्धिसे अनन्तगुणी हीन विशुद्धिवाले अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीवके द्वारा बांधी जाती है ।

णिद्दा अणंतगुणा ।। १४० ।।

एदिस्से वि तत्थेव जहण्णबंधो जादो । किं तु पयडिविसेसेण अणंतगुणा ।

पच्चक्खाणावरणीयमाणो अणंतगुणो ।। १४१ ।।

कुदो ? अपुव्वकरणखवगविसोहीदो अणंतगुणहीणविसोहिणा सव्वविसुद्धेण संजदासंजदेण बद्धजहण्णाणुभागग्गहणादो ।

कोधो विसेसाहिओ ।। १४२ ।।

पयडिविसेसेण ।

माया विसेसाहिया ।। १४३ ।।

पडडिविसेसेण ।

लोभो विसेसाहिओ ।। १४४ ।।

पयडिविसेसेण ।

अपच्चक्खाणावरणीयमाणो अणंतगुणो ।। १४५ ।।

संजदासंजदविसोहीदो अणंतगुणविसोहिणा असंजदसम्माइट्ठिणा सव्वविसुद्धेण चरिमसमए बद्धजहण्णाणुभागग्गहणादो ।

कोधो विसेसाहिओ ।। १४६ ।।

....

उससे निद्रा अनन्तगुणी है ।। १४० ।।

यद्यपि इसका जघन्य बन्ध वहींपर होता है, तो भी प्रकृतिविशेषके कारण वह प्रचलासे अनन्तगुणी है ।

उससे प्रत्याख्यानावरणीय मान अनन्तगुणा है ।। १४१ ।।

क्योंकि, अपूर्वकरण क्षपककी विशुद्धिसे अनन्तगुणी हीन विशुद्धिवाले तथा सर्वविशुद्ध संयतासंयत जीवके द्वारा बांधे गये जघन्य अनुभागका यहां ग्रहण किया है ।

उससे प्रत्याख्यानावरणीय क्रोध विशेष अधिक है ।। १४२ ।।

इसका कारण प्रकृति विशेष है ।

उससे प्रत्याख्यानावरणीय माया विशेष अधिक है ।। १४३ ।।

इसका कारण प्रकृति विशेष है ।

उससे प्रत्याख्यानावरणीय लोभ विशेष अधिक है ।। १४४ ।।

इसका कारण प्रकृति विशेष है ।

उससे अप्रत्याख्यानावरणीय मान अनन्तगुणा है ।। १४५ ।।

क्योंकि, संयतासंयतकी विशुद्धिसे अनन्तगुणी हीन विशुद्धिवाले सर्वविशुद्ध असंयतसम्यग्दृष्टि जीवके द्वारा बांधे गये जघन्य अनुभागका यहाँ ग्रहण किया है ।

उससे अप्रत्याख्यानावरणीय क्रोध विशेष अधिक है ।। १४६ ।।

पयडिविसेसेण ।

माया विसेसाहिया ।। १४७ ।।

पयडिविसेसेण ।

लोभो विसेसाहिओ ।। १४८ ।।

पयडिविसेसेण ।

णिद्दाणिद्दा अणंतगुणा ।। १४९ ।।

असंजदसम्मादिट्ठिविसोहीदो अणंतगुणहीणविसोहिमिच्छाइट्ठिणा सव्वविसुद्धेण बद्धत्तादो ।

पयलापयला अणंतगुणा ।। १५० ।।

जदि वि दोण्णं पि जहण्णाणुभागबंधाणमेक्को चेव सामी तो वि पयडिविसेसेण पयलापयला अणंतगुणा ।

थीणगिद्धी अणंतगुणा ।। १५१ ।।

पयडिविसेसेण ।

अणंताणुबंधिमाणो अणंतगुणो ।। १५२ ।।

संजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिजहण्णबंधग्गहणादो ।

....

इसका कारण प्रकृतिकी विशेषता है ।

उससे अप्रत्याख्यानावरणीय माया विशेष अधिक है ।। १४७ ।।

इसका कारण प्रकृतिकी विशेषता है ।

उससे अप्रत्याख्यानावरणीय लोभ विशेष अधिक है ।। १४८ ।।

इसका कारण प्रकृतिकी विशेषता है ।

उससे निद्रानिद्रा अनन्तगुणी है ।। १४९ ।।

क्योंकि, वह असंयतसम्यग्दृष्टिकी विशुद्धिसे अनन्तगुणी हीन विशुद्धिवाले सर्वविशुद्ध मिथ्यादृष्टि जीवके द्वारा बांधी जाती है ।

उससे प्रचलाप्रचला अनन्तगुणी है ।। १५० ।।

यद्यपि इन दोनों ही प्रकृतियोंके जघन्य अनुभागबन्धका एक ही स्वामी है, तो भी प्रकृतिविशेष होनेसे प्रचलाप्रचला निद्रानिद्राकी अपेक्षा अनन्तगुणी है ।

उससे स्त्यानगृद्धि अनन्तगुणी है ।। १५१ ।।

इसका कारण प्रकृतिकी विशेषता है ।

उससे अनन्तानुबन्धी मान अनन्तगुणा है ।। १५२ ।।

क्योंकि, संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टि जीवके द्वारा बांधे गये जघन्य अनुभागबन्धका यहां ग्रहण किया है ।

कोधो विसेसाहिओ ।। १५३ ।।

पयडिविसेसेण ।

माया विसेसाहिआ ।। १५४ ।।

पयडिविसेसेण ।

लोभो विसेसाहिओ ।। १५५ ।।

पयडिविसेसेण ।

मिच्छत्तमणंतगुणं ।। १५६ ।।

मिच्छाइट्ठिणा सव्वविसुद्धेण संजमाहिमुहेण सगद्धाए चरिमसमए वट्टमाणेण बद्धजहण्णाणुभागग्गहणादो । दोण्णं पि पयडीणं मिच्छाइट्ठिम्हि चेव सामीए संते कधं मिच्छत्तस्स अणंतगुणत्तं जुज्जदे ? ण, पयडिविसेसेण तदविरोहादो ।

ओरालियसरीरमणंतगुणं ।। १५७ ।।

जेणेसा पसत्थपयडी तेणेदिस्से संकिलेसेण जहण्णबंधो होदि । पुणो एसा जदि वि मिच्छाइट्ठिउक्कट्ठसंकिलेसेण बद्धा तो वि मिच्छत्तादो[1] अणंतगुणा । कुदो ? सुहाणं पयडीणं संकिलेसेण महल्लाणुभागक्खयाभावादो ।

....

उससे अनन्तानुबन्धी क्रोध विशेष अधिक है ।। १५३ ।।

इसका कारण प्रकृतिकी विशेषता है ।

उससे अनन्तानुबन्धी माया विशेष अधिक है ।। १५४ ।।

इसका कारण प्रकृतिकी विशेषता है ।

उससे अनन्तानुबन्धी लोभ विशेष अधिक है ।। १५५ ।।

इसका कारण प्रकृतिकी विशेषता है ।

उससे मिथ्यात्व अनन्तगुणा है ।। १५६ ।।

क्योंकि, संयमके अभिमुख हुए व अपने कालके अन्तिम समयमें स्थित सर्वविशुद्ध मिथ्यादृष्टि जीवके द्वारा बाँधे गये जघन्य अनुभागका यहां ग्रहण किया है ।

शंका– जब कि इन दोनों ही प्रकृतियोंका एक ही मिथ्यादृष्टि जीव स्वामी है तब अनन्तानुबन्धी लोभकी अपेक्षा मिथ्यात्वका अनन्तगुणा होना कैसे उचित है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, प्रकृतिविशेष होनेसे उसमें कोई विरोध नहीं आता ।

उससे औदारिक शरीर अनन्तगुणा है ।। १५७ ।।

चूंकि यह प्रशस्त प्रकृति है इसलिये इसका संक्लेशसे जघन्य बन्ध होता है । यद्यपि यह प्रकृति मिथ्यादृष्टिसम्बन्धी उत्कृष्ट संक्लेशसे बाँधी गई है, तो भी वह मिथ्यात्वकी अपेक्षा अनन्तगुणी है, क्योंकि, संक्लेशसे शुभ प्रकृतियोंके महान् अनुभागका क्षय नहीं होता ।

....

(१) अप्रतौ 'विच्छित्तादो' इति पाठः ।

वेउव्वियसरीरमणंतगुणं ॥ १५८ ॥

ओरालियसरीरं पेक्खिदूण पसत्थतमत्तादो ।

तिरिक्खाउअमणंतगुणं ॥ १५९ ॥

उक्कस्ससंकिलेस-विसोहीहि बंधाभावेण तप्पाओग्गसंकिलेस-विसोहीहि बद्धतिरिक्खअपज्जत्तजहण्णाउग्गहणादो ।

मणुसाउअमणंतगुणं ॥ १६० ॥

तिरिक्खाउआदो विसुद्धतमत्तादो ।

तेजइयसरीरमणंतगुणं ॥ १६१ ॥

तेजइयसरीरं जेण सुहुपयडी तेणेदिस्से जहण्णबंधो सव्वसंकिलिट्ठमिच्छाइट्ठिम्हि होदि । होंतो वि मणुस्साउआदो अणंतगुणो । कुदो ? सुहाणं बहुअणुभागबंधोसरणाभावादो ।

कम्मइयसरीरमणंतगुणं ॥ १६२ ॥

पयडिविसेसेण ।

तिरिक्खगदी अणंतगुणा ॥ १६३ ॥

कुदो ? सव्वविसुद्धसत्तमपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठिणा बद्धत्तादो ।

णिरयगदी अणंतगुणा ॥ १६४ ॥

....

उससे वैक्रियिक शरीर अनन्तगुणा है ॥ १५८ ॥

क्योंकि, औदारिक शरीरकी अपेक्षा वैक्रियिक शरीर अतिशय प्रशस्त है ।

उससे तिर्यगायु अनन्तगुणी है ॥ १५९ ॥

क्योंकि, उत्कृष्ट संक्लेश व विशुद्धिके द्वारा आयुका बन्ध नहीं होता, अतएव तत्प्रायोग्य संक्लेश व विशुद्धिके द्वारा बांधी गई तिर्यंच अपर्याप्तकी जघन्य आयुका यहां ग्रहण किया है ।

उससे मनुष्यायु अनन्तगुणी है ॥ १६० ॥

क्योंकि, वह तिर्यंचायुकी अपेक्षा अतिशय विशुद्ध है ।

उससे तैजस शरीर अनन्तगुणा है ॥ १६१ ॥

चूंकि तैजस शरीर शुभ प्रकृति है, अतएव इसका जघन्य बन्ध सर्वसंक्लिष्ट मिथ्यादृष्टि जीवके होता है । मिथ्यादृष्टिके होता हुआ भी वह मनुष्यायुकी अपेक्षा अनन्तगुणा है, क्योंकि, शुभ प्रकृतियोंके बहुत अनुभागबन्धका अपसरण नहीं होता ।

उससे कार्मण शरीर अनन्तगुणा है ॥ १६२ ॥

इसका कारण प्रकृतिकी विशेषता है ।

उससे निर्यग्गति अनन्तगुणी है ॥ १६३ ॥

कारण कि वह सर्वविशुद्ध सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकी जीवके द्वारा बाँधी गई है ।

उससे नरकगति अनन्तगुणी है ॥ १६४ ॥

असण्णिपंचिंदियतिरिक्खगइसंकिलेसादो अणंतगुणसंकिलेसेण बद्धत्तादो ।

मणुसगदी अणंतगुणा ॥ १६५ ॥

जदि वि एदिस्से एइंदिएसु जहण्णबंधो जादो तो वि एसा णिरयगदिं पेक्खिदूण अणंतगुणा, सुहपयडित्तादो ।

देवगदी अणंतगुणा ॥ १६६ ॥

जदि वि एदिस्से जहण्णबंधो असण्णिपंचिंदिएसु परियत्तमाणमज्झिमपरिणामेसु जादो तो वि मणुसगदिं पेक्खिदूण देवगदी अणंतगुणा, एइंदियपरियत्तमाणमज्झिमपरिणामादो असण्णिपंचिंदियपरियत्तमाणमज्झिमपरिणामाणमणंतगुणत्तदंसणादो ।

णीचागोदमणंतगुणं ॥ १६७ ॥

जदि वि एदस्स सत्तमपुढवीणेरइएसु सव्वविसुद्धपरिणामेसु जहण्णं जादं तो वि देवगदीदो णीचागोदमणंतगुणं, साभावियादो ।

अजसकित्ती अणंतगुणा ॥ १६८ ॥

पमत्तसंजदेण सव्वविसुद्धेण पबद्धत्तादो ।

असादावेदणीयमणंतगुणं ॥ १६९ ॥

एदस्स जहण्णबंधो जदि वि पमत्तसंजदम्मि चेव जादो तो वि तत्तो एदस्स

....

क्योंकि वह असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच गतिके संक्लेशकी अपेक्षा अनन्तगुणे संक्लेशके द्वारा बांधी गई है ।

उससे मनुष्यगति अनन्तगुणी है ॥ १६५ ॥

यद्यपि इसका एकेन्द्रियोंमें जघन्य बन्ध होता है तो भी यह नरकगतिकी अपेक्षा अनन्तगुणी है, क्योंकि, वह शुभ प्रकृति है ।

उससे देवगति अनन्तगुणी है ॥ १६६ ॥

यद्यपि इसका जघन्य बन्ध परिवर्तमान मध्यम परिणामोंसे युक्त असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके होता है तो भी मनुष्यगतिकी अपेक्षा देवगति अनन्तगुणी है, क्योंकि, एकेन्द्रियके परिवर्तमान मध्यम परिणामोंकी अपेक्षा असंज्ञी पंचेन्द्रियके परिवर्तमान मध्यम परिणाम अनन्तगुणे देखे जाते हैं ।

उससे नीचगोत्र अनन्तगुणा है ॥ १६७ ॥

यद्यपि सर्वविशुद्ध परिणामवाले सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें इसका जघन्य बन्ध होता है, तो भी देवगतिकी अपेक्षा नीचगोत्र अनन्तगुणा है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

उससे अयशःकीर्ति अनन्तगुणी है ॥ १६८ ॥

क्योंकि, वह सर्वविशुद्ध प्रमत्तसंयत जीवके द्वारा बाँधी गई है ।

उससे असातावेदनीय अनन्तगुणी है ॥ १६९ ॥

यद्यपि इसका जघन्य बन्ध प्रमत्तसंयतके ही होता है, तो भी उससे इसका अनुभाग

अणुभागो अणंतगुणो पयडिविसेसेण ।

जसकित्ती उच्चागोदं च दो वि तुल्लाणि अणंतगुणाणि ।। १७० ।।

एदेसिं दोण्णं पि पंचिंदिएसु अइतिव्वसंकिलिट्ठमिच्छाइट्ठीसु जदि वि जहण्णं जादं तो वि तत्तो एदेसिमणुभागो अणंतगुणो, सुहपयडीणं बहुवाणुभागबंधोसरणाभावादो ।

सादावेदणीयमणंतगुणं ।। १७१ ।।

एदस्स वि जहण्णाणुभागबंधस्स सव्वसंकिलिट्ठो मिच्छाइट्ठी चेव सामी, किंतु पयडिविसेसेण अणंतगुणो ।

णिरयाउअमणंतगुणं ।। १७२ ।।

कुदो ? साभावियादो ।

देवाउअमणंतगुणं ।। १७३ ।।

कारणं सुगमं ।

आहारसरीरमणंतगुणं ।। १७४ ।।

अप्पमत्तसंजदेण तप्पाओग्गविसुद्धेण पबद्धत्तादो ।

एवं जहण्णयं चउसट्ठिपदियं परत्थाणप्पाबहुगं समत्तं ।

संपहि एदेण सूचिदसत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो--सव्वमंदाणुभागं मणपज्जव-

....

प्रकृतिविशेष होनेसे अनन्तगुणा है ।

उससे यशःकीर्ति और उच्चगोत्र दोनों ही तुल्य होकर अनन्तगुणे हैं ।। १७० ।।

यद्यपि अति तीव्र संक्लेशयुक्त पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंमें इन दोनों ही प्रकृतियोंका जघन्य बन्ध होता है, तो भी असाता वेदनीयकी अपेक्षा इनका अनुभाग अनन्तगुणा है, क्योंकि, शुभ प्रकृतियोंके बहुत अनुभाग बन्धका अपसरण नहीं होता ।

उससे सातावेदनीय अनन्तगुणी है ।। १७१ ।।

इसके भी जघन्य अनुभागबन्धका स्वामी सर्वसंक्लिष्ट मिथ्यादृष्टि जीव ही है, किन्तु प्रकृतिविशेष होनेसे वह उक्त दोनों प्रकृतियोंसे अनन्तगुणी है।

उससे नारकायु अनन्तगुणी है ।। १७२ ।।

क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

उससे देवायु अनन्तगुणी है ।। १७३ ।।

इसका कारण सुगम है ।

उससे आहारक शरीर अनन्तगुणा है ।। १७४ ।।

क्योंकि, वह तत्प्रायोग्य विशुद्धिको प्राप्त अप्रमत्तसंयत जीवके द्वारा बाँधा गया है ।

इस प्रकार चौंसठ पदवाला जघन्य परस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब इससे सूचित होनेवाले स्वस्थान अल्पबहुत्वको कहते है- मनःपर्ययज्ञानावरणीय